

*hüllt*, = व्याप्त TRIK. 3, 3, 158. H. a. n. 2, 170. MED. I. 20. शिरातत VARĀH. LAGHŪ. 2, 16. तमो तमोभिः — तताम् Çiç. 9, 23. फणभूताममितो विततं त- तम् — कुलिः KH. 3, 11. एते (राजानः) तु कीर्तिता मुध्या वैराध्यामिदे ततम् MBH. 1, 2455. — 2) *sich ausbreiten*, vom Licht so v. a. *scheinen*: उद्धां चतुर्वर्षा सुप्रतीकं देवैरेति सूर्यस्ततन्वान् RV. 7, 61, 1. ऋतमर्षति सिन्धवः सत्यं तंतान् सूर्यः 4, 10, 12. कदा नः सूर्यो घणौन ततननुपासः 4, 15, 3. — 3) *sich in die Länge ziehen, dauern, anhalten*: यानु द्यावस्तंतन्याडुपा- सः RV. 7, 88, 4. 10, 37, 2. पदकानि विश्वा ततनंत कृष्टयः 1, 32, 11. पर्वन्त्यं इव ततनन्दि वृद्धा मृच्छमयता ददत् 8, 21, 18. पर्वन्त्यं इव ततनः 1, 38, 14. — 4) *dehnen, strecken, spannen, breiten, ausbreiten; aufziehen* (ein Gewebe): धनुः RV. 9, 99, 1. (पेश्कार्) नवतरं द्रयं तनुने *treiben* (von der Arbeit des Goldschmieds) ÇAT. BR. 14, 7, 2, 5. तनुं तनुष पूव्यम् RV. 1, 142, 1. 8, 13, 14. तनुं तंत संवर्षती 2, 3, 6. तन्म 10, 71, 9. अकृतन् अयन् तन्निरे AV. 14, 1, 45. PĀNĀV. BR. 7, 8. तुभ्यंमुपासः प्रुचयः परावति भद्रा वस्त्रा तन्वते RV. 1, 134, 4. रात्री वासस्तनुते सिमस्मै 113, 4. पञ्चैर्यथा प्रथमः पथस्तते *Pfade breiten d. h. bahnen* 83, 5. — बाह्वोः सकारोऽस्त- तयोः AK. 2, 6, 2, 38. अडुष्ठे तते 34. ततापुय *ein angezogener d. i. mit der Sehne bezogener Bogen* MBH. 4, 14, 1. अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वामिदे ततम् BHĀG. 2, 17, 8, 22. आत्मनि लोके च — मो ततम् (Kṛishṇa spricht) BHĀG. P. 3, 9, 31. तताततयपः DHĪRTAS. 83, 8. एवं सूत्रशतैस्त्वैर्द्विद्विज्ञा- लानि तन्वते । जालीपनीविना धूर्ता धरायां धीवरा इव ॥ KATHĪS. 24, 199. पुष्यास्तरास्ते (तरवः) ऽङ्गसुखान्तन्वन् BHĀTT. 10, 22. कूलानि सामर्षतयेव तैनुः सरोजलक्ष्मीं स्थलपद्मक्ष्मिः 2, 3. तथा तावास्थतो वाषाणतानिष्टा तमो यथा 15, 91. तनुं तन्वानः *den Geschlechtsfaden ausdehnend. sein Geschlecht fortpflanzend* BHĀG. P. 2, 3, 8. ते तन्वानास्तनूस्त्रत्र ब्रह्मवंशाननु- त्तमान् *sich in Brahmanengeschlechtern fortpflanzend* HARIV. 2386. तय- शः पावनं दिनु शतमन्योऽरिवातनोत् BHĀG. P. 1, 8, 6. तन्वानः *priyavachnani freundliche Worte verbrettend d. h. sprechend* DAÇAK. 7, ult. मलिनमपि हिमंशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति *verbreiten* so v. a. *vermehrten* ÇĀK. 19. गति- मिह नलो ऽतनोद्यनेन *richtete seinen Gang mit dem Wagen hierher* NA- IOD. 1, 20. *pass. sich ausbreiten, sich ausdehnen, zunehmen*: अताप्यस्यो- नमं सन्नम् BHĀTT. 6, 33. अमर्षश्चाप्यतापत 17, 50. कामास्ते ऽन्यत्र ताप- त्ताम् 20, 25. तत *ausgebreitet, weit*, = *विस्तृत* AK. 3, 2, 35. TRIK. 3, 3, 158. MED. I. 20. = *पृथु* H. a. n. 2, 170. — 5) *in die Länge ziehen* (in der Zeit): मा चिरे तनुथा अर्षः RV. 5, 79, 9. — 6) *übertragen auf das Opfer- werk und Gebet, deren Gefüge und Aufeinanderfolge mit einem Gerebe verglichen wird, ausführen*: पञ्चं तै तनवावैकै RV. 1, 170, 4. 3, 3, 6. VS. 2, 13. AV. 4, 13, 16. ÇAT. BR. 1, 9, 2, 16 und oft. AIT. BR. 1, 8, 2, 11. वि- ज्ञानं यज्ञं तनुते । कर्माणि तनुते ऽपि च TAĪTT. UP. 2, 3. अश्रोत्रियते यज्ञे M. 4, 205. अर्धरम् RV. 10, 17, 41. ऋत्विजस्तव तन्वन्तु सप्ततनुं मृच्छाधरम् MBH. 2, 1937. नवातिं नवाधिकां मृच्छाकतूनाम् — ततान सोपानपरंपरामिव RAĞH. 3, 69. सुषाव च वङ्गसोमान्सोमसंस्थास्ततान च MBH. 1, 4695. सन्नं तेने 3. 10791. यामर्षवा मनुष्यिता दृध्यङ् धियमर्षत RV. 1, 80, 16. ध्यानं त- तान सः KATHĪS. 24, 98. ततं मे अयस्तडं तायेते पुनः RV. 1, 110, 1. Mit Aus- lassung von यज्ञ u. s. w.: यो ऽन्यत्र चानुर्मास्येभ्यः संवत्सरं तनुते ÇAT. BR. 13, 2, 5, 2. *opfern*: पञ्च पशवस्तापते KAUC. 127. *ausdehnen* so v. a. *ausar- beiten, verfassen*: नाम्नां मालां तनोम्यहम् H. 1. तनुते टीकाम् Schol. zu KAUC- RAP. in d. Einl. — 7) *ausbreiten* so v. a. *Jmd Etwas verleihen, zufügen, berei-*

*ten*: पितृमुदं तेन ततान तो ऽर्भकः RAĞH. 3, 25. यज्ञतां शं तनोति । कामानमोधा- न् BHĀG. P. 1, 17, 34. न तनोपि च नो वसु (वसुधे) 4, 17, 22. (पदम्) यन्मापया नस्तनुषे भूतमूहम् 3, 24, 20. प्रभुप्रसादा हि तनोति पौरुषम् PRAB. 30, 13. पार्वत्याः प्रतिगात्रचित्रगतयस्तन्वन्तु भद्राणि वः DHĪRTAS. 66, 10. कुतूहलं त्रस्तु ततान तस्य BHĀTT. 2, 17. ततद्रुह् der Jmd eine Unbill zugefügt hat BHĀG. P. 1, 18, 37. — Vgl. ऋषीतत, तति. — *desid. तितनिषति, तितंसति und तितंसति* P. 6, 4, 17. 7, 2, 49, VĀRT. VOP. 19, 8. — *intens. ततन्त्यते, ततनीति* Sch. zu P. 6, 4, 44 und 7, 4, 85.

— अति, davon partic. अतितत *der sich sehr breit macht, sehr über- müthig* Çiç. 19, 3. = अत्युद्धत Sch.

— व्यति med. *um die Wette ausdehnen*: विषति व्यत्यत-वातां मूर्त्तिं हरिप्योनिधिं BHĀTT. 8, 3.

— अथि *beziehen* (den Bogen mit der Sehne): धनुर्धितनोति ÇAT. BR. 5, 3, 3, 27. *überdecken*: केमच्छन्नैरधिततान् (गजान्) R. 5, 12, 33.

— अनु 1) *sich ausdehnen nach, entlang*: पाहृदयमुपर्षतनुतन्वति की- कोसाः AV. 9, 8, 14. — 2) *fortführen, fortsetzen*: केनापो अन्वतनुत् AV. 10, 2, 16. ततो ऽसि तनुस्वप्यनु मा तनुहि KĀTJ. ÇR. 3, 8, 25. LĪTJ. 2, 11, 3. त- स्मात्संज्ञनयेत्क्रोषं स कृतयं परिपालयेत् । परिपाल्यानुतनुयात् so v. a. *ver- mehrten* MBH. 12, 4816. — 3) *fortführen, keine Unterbrechung erleiden lassen, aufrecht erhalten*: धर्ममेवानुतन्वती MBH. 3, 12681.

— अय s. अयतानवा.

— अमि 1) *sich ausbreiten vor, — über Etwas, hinreichen über*: येनामि कृष्टीस्ततनाम विश्चक्षा पनाप्यमोडो अस्मे समिन्वतम् RV. 1, 160, 5. तदो यामि द्रविषो येना स्वर्षा तननाम नृभिः 5, 34, 15. — 2) *vor Etwas her spannen, — aufstellen*: अमि व्रजं न तालिषे मूर् उपाकचतसम् । यदिन्द्र मूक्योमि नः RV. 8, 6, 25. अमि व्रजं तालिषे गव्यमर्धम् 9, 108, 6.

— अय 1) *sich herabsenken, sich ziehen nach*: द्विवो मूलमवततम् AV. 2, 7, 3. यो धूमो ऽवतनोति KAUC. 14. विशालमूलावतत (न्यग्रोध) *sich herab- senkend mit seinen umfangreichen Wurzeln* HARIV. 3612. अयततं als Beiw. von Çiva MBH. 12, 10359. — 2) *sich über Etwas hinziehen, überdecken*: खमवततय — मलिलदाः VARĀH. BRH. S. 24, 19. अयतत *überdeckt, bedeckt*: नभसि मेधावतते SUGR. 1, 20, 7. महावितानावततप्रकाश MBH. 6, 2664. यानिन — कम्बलावततेन R. 1, 17, 14. तुरगैधिरवतता — मूः 2, 93, 4. लताश- तैरवतता (नदी) 5, 16, 28, 93, 20. — 3) *abspannen, schlaffmachen; abnehmen* (die Sehne vom Bogen): यदाततुमव ततनु AV. 7, 90, 3. अयं द्विवरा मधव- द्यस्तनुष RV. 2, 33, 14. 4, 4, 5 (P. 6, 4, 106, VĀRT., Sch.). 10, 116, 5, 8, 19, 20. धनूषि ÇAT. BR. 9, 1, 4, 27. अयं ज्यामिव धन्वतो मनुं तं नोमि ते हृदः AV. 6, 42, 1, 2. — Vgl. अयततधन्वन्, अयतंस, अयतंसक, अयतान.

— अयव *sich ausbreiten entlang, sich hinziehen nach*: रश्मिभिर्ह्येन- द्यवतनोति ÇAT. BR. 6, 3, 1, 18. रश्मयः प्राणानयवतायते 2, 3, 2, 7.

— आ 1) *sich anbreiten über, Etwas durchdringen, überziehen*; na- mentlich vom Licht, daher *bescheinen*: आ यो तनोषि रश्मिभिः RV. 4, 52, 7. 3, 22, 2. रोदसी ज्योतिषा वङ्किरातनोत् 2, 17, 4. 4, 38, 5. 5, 1, 7. 7, 5, 4. 47, 4. प्रुक्तेभिरङ्कै रजं आततन्वान् 3, 1, 5. स्वर्षां प्रुक्त् तन्वन्तु आ रजः 4, 43, 2, 6. VS. 13, 22. कृतमो यो रश्मिर्स्या ततान RV. 1, 33, 7. पदम् *Platz greifen, festen Fuss fassen*: प्रियपुरता युवतीनां तावत्पदमातनोतु हृदि मानः BHĀTT. 1, 32. — 2) *sich richten nach Etwas hin, zustreben auf*: आ हि द्यावापृथिवी पृञ्जा न मातरा तन्वन् RV. 10, 1, 7. तद्यथा महा-